वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :3 अंक : 141 | सोमवार 18 सितम्बर 2023 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

नई शिक्षा नीति भविष्य की संभावनाओं की नई राहों को सृजन करने वाली: राज्यपाल

महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय कुम्हेर के नवीन प्रशासनिक भवन एवं कुलपति सचिवालय का किया लोकार्पण

जयपुर. कासं

राज्यपाल कलराज मिश्र ने रविवार को डीग जिले के कुम्हेर स्थित महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय के नवीन प्रशासनिक भवन एवं कुलपति सचिवालय, का लोकार्पण किया। इसके साथ ही उन्होंने विश्वविद्यालय के आवासीय परिसर, विद्यार्थी गतिविधि केंद्र, महारानी किशोरी कन्या छात्रावास, स्वामी विवेकानंद छात्रावास, स्वामी दयानंद सरस्वती ट्रांजिट हॉस्टल का शिलान्यास कर अकादमी भवन का भूमि पूजन किया। कार्यक्रम में नई शिक्षा नीति–2020 के आलोक में स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों के एकेडमिक करिकुलम पर आयोजित कार्यशाला का आयोजन भी किया गया। राज्यपाल कलराज मिश्र ने कहा है कि शैक्षणिक गुणवत्ता जरूरी है परन्तु उससे भी जरूरी यह है कि अध्ययन-अध्यापन में युगानुरूप आवश्यकताओं का समावेश हो। उन्होंने छात्रों और शिक्षकों से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और मौलिक शोध की संस्कृति के नए आयाम स्थापित करने की अपील की। उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति से जुड़े अकादमिक प्रावधानों को स्वयं शिक्षक समझकर प्रतिबद्ध होकर यदि उन्हें विद्यार्थियों के लिए लागू करने की पहल नहीं करेगा तब तक इस नीति की मूल मंशा को हम चरितार्थ नहीं कर पाएंगे। उन्होंने विश्वविद्यालय के शिक्षकों से कहा की वे नई शिक्षा नीति के अंतर्गत अकादमिक विषय-वस्तु इस तरह से निर्धारित करें कि शैक्षिक नवाचारों से आत्मनिर्भर भारत की आवश्यकताओं के अनुरूप भावी नागरिक तैयार कर सकें। इस अवसर पर विश्वविद्यालय कुलपति प्रोफेसर रमेश चन्द्रा ने विश्वविद्यालय की गतिविधियों से अवगत कराया।

राज्यपाल ने मेहंदीपुर बालाजी के दर्शन किए

राज्यपाल कलराज मिश्र ने रविवार को दौसा जिले में मेहंदीपुर बालाजी के दर्शन किए। राज्यपाल मिश्र ने बालाजी से देश और प्रदेशवासियों की संपन्नता और खुशहाली की कामना की।

राष्ट्र उन्नत, गतिशील, संस्कारित और प्रतिष्ठित तभी होता है जब वहां शिक्षा की उत्कृष्ट व्यवस्था हो : राज्यपाल

राज्यपाल कलराज मिश्र के मुख्य आतिथ्य में भरतपुर जिले की पंचायत समिति रूपवास के ग्राम खानुआं में आदर्श विद्या मंदिर के नवनिर्मित विद्या भारती विद्यालय के नवीन भवन का लोकार्पण हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता राजेन्द्र प्रसाद खेतान ने की तथा कार्यक्रम पूर्व अध्यक्ष माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर भरतराम कुम्हार, समाजसेवी एवं एआईए की अध्यक्ष डॉ. उर्मिलेश आर्य, डॉ. यशपाल आर्य, महेन्द्र सिंह मग्गो एवं शिव प्रसाद विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। राज्यपाल कलराज मिश्र ने इस अवसर पर कहा कि समाज में शिक्षा जितनी जरूरी है, उतना ही संस्कारों के निर्माण पर भी ध्यान देना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि कोई राष्ट्र अपनी संस्कृति और जीवन मूल्यों को बचाए रखने के साथ नई पीढ़ी को इनके लिए तैयार करने का कार्य करता है तभी उसकी सार्थकता है। उन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य की ज्ञान संपदा में वृद्धि के साथ सभी जीवों के प्रति सम्मान का भाव जागृत करना है। राज्यपाल मिश्र ने कहा कि सूक्ष्म निरीक्षण, अनुभव विस्तार और निरंतर अध्ययन किसी भी विद्यार्थी को सफलताओ के शीर्ष पर पहुंचा सकता है। इस दिशा में विद्या भारतीय संस्थान ने जो कार्य देश-विदेश में किया है, वह अनुकरणीय है। उन्होंने कहा कि हमें आज इस तरह की ही शिक्षा पद्धति की अधिक आवश्यकता है जो व्यक्ति को शिक्षित बनाने के साथ दीक्षित भी करे। उन्होंने नई शिक्षा नीति को 'आत्म निर्भर' भारत के लिए महत्वपूर्ण बताते हुए इसे देश के नागरिकों को उन्नत तथा युगानुकूल बनाने में उपयोगी बताया। उन्होंने पंचपदी शिक्षा पद्धति है की चर्चा करते हुए कहा कि यह भारतीय संस्कारों से ओतप्रोत है।

जब दीवान अमर चन्द जी ने शेर को जलेबी खिलाई !

हीरा चन्द बैद

खण्डेलवाल दिगम्बर जैन श्योजीराम जी पाटनी जयपुर राजदरबार में दीवान थे , इन्हीं के पुत्र अमर चन्द भी जयपुर राजदरबार में 32 वर्ष तक प्रतिष्ठित दीवान पद पर सेवारत रहे। । अपने पिता समान ही अमर चन्द जी भी कुशल प्रशासक व वीर होने से राजा के विशेष कृपा पात्र थे इसीलिए इन्हें अनेक बार दरबार में द्वेषता का शिकार होना पड़ा , लेकिन अमर चन्द जी अपने दया व अहिंसा धर्म के अवलम्बन से सदैव ही अपने ऊपर आये संकटों पर विजय प्राप्त करते रहे। जयपुर के नागरिक दीवान अमर चन्द जी के प्रति विशेष स्नेह व आदर रखते थे। सदैव की भांति एक बार दरबार लग रहा था, जयपुर नरेश सिंहासन पर बिराजमान थे। सामने दीवान अमर चन्द जी व अन्य सामंत और दरबारी गण बैठे थे। जयपुर नरेश ने दरबार को सम्बोधित करते हुए कहा कि हम आवश्यक कार्य से बाहर जा रहे हैं और हमारे नये मेहमान शेर (सिंह) की देखभाल का जिम्मा किसी योग्य व्यक्ति के हाथ में देना चाहते हैं अतः आप लोग ही बताईए कि यह कार्य किसे सम्हलाया जाए जिससे शेर के लिए समय से मांसाहार की उचित व्यवस्था हो जाये। यह बात सुनकर एक सामंत बोला हुजूर अमर चन्द जी से अच्छी व्यवस्था कोई नहीं कर सकता, राजा साहब ने कहा अमर चन्द जी जैन है वे मांस के हाथ लगाना तो दूर उसे देख भी नहीं सकते।सामंत ने अमर चन्द जी की तरफ इशारा करते हुए कहा - हुजूर ! सब की राय है कि अमर चन्द जी साहब इस काम को बखूबी कर पायेंगे। यह सुनकर अमर चन्द जी ने कहा, हुजूर ! क्या यह जरूरी है कि शेर को मांस ही खिलाया जाये। राजा साहब अमर चन्द जी से बोले, दीवान जी शेर मांस नहीं खायेगा तो क्या जलेबी खायेगा। इस बात पर उपस्थित दरबारी जोर से हंसने लगे। अमर चन्द जी ने कहा हुजूर ! आप हुक्म करें तो मैं शेर को जलेबी खिला सकता हूं। अमर चन्द जी की इस बात पर पुनः सब हंसने लगते हैं।एक सामंत ने कहा हुजूर ! अब तो शेर जलेबी व गधे तम्बाकू भी खाने लगेंगे। एक बार फिर दरबार में हंसी गूंज उठती है। राजा साहब ने कहा, देखो दीवान जी, आपकी बात पर सब लोग हंस रहे हैं। अमर चन्द जी सहज भाव से बोले कोई बात नहीं, हुजूर ! आज व्यंग्य में हंस रहे हैं सम्भव है कि कल आश्चर्य से हंसने लगे। आज मजाक उडा रहे हैं हो सकता है कल ये ही लोग दांतों तले अंगुली दबाते नजर आए।। एक सामंत बोला,हुजूर ! अबकी बार दीवान अमर चन्द जी का यह चमत्कार भी देखने का अवसर अवश्य ही दीजिए। दूसरा सामंत बोला हम सब की यही इच्छा है कि जलेबी शेर खायेगा, तमाशा हम भी देखेंगे पड़ेगा उल्टा या सीधा, वह पाशा हम भी देखेंगे। राजा साहब ने गंभीर स्वर में कहा कि बड़ी अस्वाभाविक बात है दीवान जी कि शेर जलेबियां खाएं, मैं तो इस विषय में आप से आग्रह नहीं करता, यदि स्वेच्छा से यह कार्य अपने हाथ में ले रहें हैं तो आपकी इच्छा। अमर चन्द जी बोले, हुजूर ! आप किसी प्रकार की चिन्ता न करें। महाराज, मेरे आत्म विश्वास पर भरोसा करें। राजा साहब ने कहा दीवान साहब

फिर जैसी आपकी इच्छा। यह कहकर राजा साहब ने दरबार समाप्ति की घोषणा कर दी। अगले दिन दीवान अमर चन्द जी ने शेर के पिंजरे के पहरेदार को कहा आज से मांस के स्थान पर जलेबी से भरीं थाली शेर के पिंजरे में सरका देना। एक दिन हो गया, दो दिन हो गए, तीन दिन हो गए लेकिन शेर ने जलेबी नहीं खाई वह भूख से आक्रामक हो गया। तीसरे दिन अमर चन्द जी के घर जाकर पहरेदार कहता है, हुजूर ! तीन दिन हो गये रोज जलेबी से भरीं थाली पिंजरे में रख दी गई लेकिन खाना तो दूर शेर थाली तक उठकर भी नहीं आया। दीवान अमर चन्द जी ने कहा अच्छा ! कल हम स्वयं शेर के पिंजरे में प्रवेश करके शेर को जलेबियां खिलाएंगे , पहरेदार जी अब आप जा सकतें हैं। वापस जाते समय पहरेदार को मार्ग में तीन सामंत मिलते हैं एक ने पहरेदार से पूछा कहो

हाथ में रखी जलेबी की थाली को शेर की तरफ आगे करते हुए अमर चन्द जी शेर से निवेदन करते हैं वनराज! ये जलेबियां आप के लिए है इन्हें खा कर अपनी क्षुधा शान्त कर लीजिए, शेर शांत भाव से सामने खड़े अमर चन्द जी की और देखता है,अमर चन्द जी पुनः विनय भाव से कहते हैं, हे वनराज! यदि मांस ही खाना है तो लो-मैं हाज़िर हूं, मुझे खाकर अपनी क्षुधा मिटा लो...

भाई कहां हो आये? पहरेदार ने उत्तर दिया अमर चन्द जी के पास गया था शेर की खबर देने। दूसरा सामंत बोला क्यों क्या हुआ शेर को? पहरेदार ने कहा होना क्या था बिचारा शेर तीन दिन से भूखो मर रहा है। सामंत बोला भूखों मर रहा है - क्या जलेबियां नहीं खाई? पहरेदार ने उपेक्षित भाव से कहा अरे साहब! क्या शेर भी जलेबी खाता है ?, यह तो हमारे दीवान साहब की हठ है। पहले सामंत ने कहा तब तो अब की बार सारी हेकड़ी निकल जाएगी दीवान साहब की, बड़ी अकड़ से बात करते हैं दरबार में, कोई भोले-भाले हिरण थोड़े ही है जो दीवान जी की आवाज पर रूक गये , अब तो जंगल के राजा शेर से पाला पड़ा है। पहरेदार बोला- परन्तु दीवान साहब ने कहा है कि कल वे स्वयं पिंजरे में प्रवेश करके शेर को अपने हाथ से जलेबी खिलायेंगें। यह खबर समूचे जयपुर शहर में आग की तरह फैल गई। अगले दिन शहरवासियों का रेला का रेला आतिश की ओर चला जा रहा था ।(वर्तमान के त्रिपोलिया बाजार में सरगासूली के पीछे स्थित आतिश मार्केट (महारानी गायत्री देवी मार्केट) आतिश में जयपुर राज्य के घोड़े बंधते थे । आतिश के विशाल चोक में लोहे के मजबूत सरियों से बना पिंजरा रखा हुआ था जिसमें भयानक शेर बंद था । चारों और दर्शकों का भारी जनसमूह एकत्रित था, सामने राजदरबार के उच्च अधिकारी बैठें थे। सहसा दीवान अमर चन्द जी साहब हाथों में जलेबी की थाली लिए आतिश में प्रवेश करते हैं , शेर के पिंजरे के पास खड़े होकर दर्शकों का अभिवादन करते हुए सम्बोधित करते हुए कहतें हैं प्रिय नागरिक बन्धुओं , आज मैं स्वेच्छा से अहिंसा का शस्त्र लेकर हिंसा से मुकाबला करने जा रहा हूं। कदाचित मैं इस प्रयास में अपनी जान से हाथ धो बैठूं तो उसका दोषी अन्य किसी को न समझा जायें। अब दीवान साहब के कहने पर पहरेदार पिंजरे की खिड़की खोलता है , अमर चन्द जी के पिंजरे में प्रवेश करते ही खिड़की बन्द कर दी जाती है । अमर चन्द जी को पिंजरे में देख शेर गुरार्ता हुआ दहाड़ता है जिसे सुनकर दर्शकों के दिल दहल जातें हैं, समूचे आतिश में सन्नाटा पसर जाता है जैसे सब की सांसें रूक गई हो । अमर चन्द जी शेर को सम्बोधित करते हुए बहुत विनय भाव से कहते हैं शांत .. वनराज शांत ..

शेर शांत व नरम हो जाता है ।

हाथ में रखी जलेबी की थाली को शेर की तरफ आगे करते हुए अमर चन्द जी शेर से निवेदन करते हैं वनराज ! ये जलेबियां आप के लिए है इन्हें खा कर अपनी क्षुधा शान्त कर लीजिए, शेर शांत भाव से सामने खड़े अमर चन्द जी की और देखता है, अमर चन्द जी पुनः विनय भाव से कहते हैं, हे वनराज ! यदि मांस ही खाना है तो - लो - मैं हाज़िर हूं, मुझे खाकर अपनी क्षुधा मिटा लो, अब तो हिंसक व मांसाहारी वनराज बिल्कुल शांत मुद्रा में अमर चन्द जी के आत्मतेज के आगे मस्तक झुका कर जलेबियां खा लेता है , दीवान अमर चन्द जी खाली थाली लेकर पिंजरे से बाहर आते हैं , दर्शकगण अहिंसा धर्म की जय के नारे लगाते हैं । दीवान अमर चन्द जी जिन्दाबाद के नारों से समूचा आतिश गूंज उठता है । अहिंसा व शाकाहार की बहुत बहुत प्रसंशा होती है। इस प्रकार दीवान अमर चन्द जी पर भक्तामर स्तोत्र के 39 वें काव्य की अन्तिम दो पंक्तियां पूर्ण रूप से चरितार्थ हुई ।

बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रमति क्रमयुगाचल-संश्रितं ते।।

हीरा चन्द बैद
एस-21, सरदार भवन, मंगल मार्ग,
बापू नगर, जयपुर
मैं .न. 9828164556

आचार्य श्री शांति सागर जी भरत क्षेत्र के सूर्य है : आचार्य श्री वर्धमान सागर जी

उदयपुर. शाबाश इंडिया

सकल दिगंबर जैन समाज उदयपुर द्वारा प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज के 68 वे अंतर्विलय समाधि वर्ष के उपलक्ष्य में दिनांक 16 एवं 17 को दो दिवसीय विनयांजलि के विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए । धर्म सभा में आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने मंगल देशना में बताया कि भारत में जितने भी साधु हैं वह आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज की देन है। उन्हें चारित्र सूर्य के रूप में स्मरण किया जाता है। जिस प्रकार जंबूदीप में दो सूर्य है ,उसी प्रकार भरत क्षेत्र में प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ भगवान और प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज सूर्य है। भगवान श्री आदिनाथ ने धर्म तीर्थ का प्रवर्तन किया वहीं आचार्य श्री शांति सागर जी ने मुनि चारित्र धर्म का प्रवर्तन किया। पूर्व में दक्षिण भारत में जो साधु थे उनके चरित्र में निर्मलता नही थी ।जिस प्रकार सूर्य पूर्व दिशा में उदित होकर पश्चिम दिशा में अस्त होता है वैसे आचार्य शांति सागर जी दक्षिण भारत में उदित हुए ।आपने चरित्र के प्रवर्तन के लिए दक्षिण से लेकर उत्तर संपूर्ण भारत में मंगल विहार कर अपने प्रवचन उपदेश के माध्यम से प्रचार प्रसार किया। भारत में जैन साधुओं के दर्शन आचार्य शांति सागर जी की देन है क्योंकि सभी को यह सौभाग्य मिल रहा है नहीं तो साधुओं के दर्शन दुर्लभ हो जाते। आचार्य शांति सागर जी ने दुर्लभता को सुलभता प्रदान की। एक उदाहरण में आचार्य श्री ने मंगल देशना में बताया कि उद्योगपति उद्यम व्यापार के माध्यम से भौतिक आर्थिक विकास करते हैं आचार्य शांति सागर जी भी आध्यात्मिक उद्योगपति रहे उन्होंने चारित्र के जितने भी अंग हैं उनका जीवन में परिपालन कर अपने जीवन को प्रयोगशाला बनाया उन्होंने अनेक, सिंह के, सर्प के ,चींटी के, मकोड़े के, उपसर्ग को क्षमता भाव से सहन किया। जिनवाणी को तांबे पर अंकित कराया। जिन मंदिर जैन धर्म की संस्कृति की रक्षा के लिए 1105 दिन अन्न आहार नही लिया। आपने

40 वर्ष के साधु जीवन में 9938 उपवास किए। उदयपुर का सौभाग्य है कि सन 1934 में आचार्य श्री का चातुर्मास आयड उदयपुर में हुआ आचार्य शांति सागर जी को निर्दोष चर्या के कारण सन 1924 में समडोली में आचार्य पद दिया गया । सन 2024 में आचार्य पद प्रतिष्ठापना को 100 वर्ष पूरे हो रहे हैं। उदयपुर से शताब्दी आचार्य पदारोहण का शुभारंभ हो चुका है । भारतवर्ष में नहीं पूरे विश्व में आचार्य शांति सागर जी का शताब्दी वर्ष मनाया जाना चाहिए। अपने दिगंबर जैन महासभा के अध्यक्ष गजराज गंगवाल एवं महामंत्री प्रकाश ज बड़जात्या चेन्नई को प्रेरणा दी कि महासभा विस्तृत कार्य योजना बनाकर आचार्य श्री शांति सागर जी का शताब्दी महोत्सव बनाने के लिए संकल्पित हो । आचार्य श्री के मंगल प्रवचन के पूर्व प्रात 7:00 बजे नगर के प्रमुख मार्गो में आचार्य शांति सागर जी के जीवन ,उपसर्ग, दीक्षा 41 वर्ष के संयम जीवन को दर्शाने वाली विभिन्न झांकियां नगर के समाज के विभिन्न सामाजिक धार्मिक मंडलों द्वारा बनाई गई ।चारित्र चक्रवर्ती शोभा यात्रा में आचार्य श्री वर्धमान सागर जी भी संघ सहित शामिल हुए। शोभा यात्रा का समापन हूमड भवन में हुआ । जहां संघ के मंचासीन होने के बाद आचार्य शांति सागर जी महाराज सहित पूवार्चार्यों के चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्जवलन का सौभाग्य आचार्य श्री के दीक्षित साधुओ के गृहस्थ अवस्था के परिजनों को प्राप्त हुआ । पंडित हँसमुख जैन, धर्मचंद गुरुजी,डॉक्टर महेश, राजेश पंचोलिया, देवेंद्र बोहरा राजकुमार अखावत आदि परिवारों ने आचार्य शांति सागर जी के चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्वलन किया तथा पूवार्चार्य को अर्ध समर्पित किया। आचार्य श्री के चरण प्रक्षालन शास्त्र भेंट और अर्घ समर्पित करने का सौभाग्य सकल जैन समाज के अध्यक्ष शांतिलाल वेलावत एवं सुरेश पद्मावत को प्राप्त हुआ आचार्य शांति सागर जी के जीवन पर उपस्थित विद्वानों पंडित हँसमुख शास्त्री पंडित धर्मचंद शास्त्री गुरु शांतिलाल वेलावत, सुरेश पद्मावत गजराज गंगवाल, प्रकाश बड़जात्या चेन्नई तथा अन्य वक्ताओं ने आचार्य श्री के जीवन के बारे में जानकारी दी। जैन गजट का तथा आचार्य श्री शांति सागर जी पर होने वाली आगामी प्रतियोगिता पोस्टर का विमोचन अतिथियों ने किया। कार्यक्रम का संचालन प्रकाश सिंघवी ,राजेश देवड़ा ने किया।

संकलन: अभिषेक जैन लुहाड़िया रामगंजमंडी

वेद ज्ञान

सहनशीलता सर्वश्रेष्ठ गुण

सहनशीलता मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ गुण है। विपरीत परिस्थितियों में भी व्यवहार संतुलित बना रहे, यह बड़ा तप है। सूत्र रूप में यदि समझें तो किसी भी प्रकार के नकारात्मक अथवा सकारात्मक अतिरेक से अप्रभावित रहना सहनशक्ति का प्रमाण है। व्यावहारिक रूप से ऐसा कर पाना अति दुष्कर है। नकारात्मक सोच के सामने आते ही मनुष्य क्रोध और अहंकार से भर उठता है और प्रतिवाद में ऐसे कदम उठता है जो सभ्य समाज को स्वीकार्य नहीं होते। इससे पाप और अपराधों का जन्म होता है। सकारात्मक स्थितियों में व्यक्ति के अंदर का लोभ, मोह और वासनाएं प्रबल हो जाती हैं। इनसे भी पाप और अपराध ही जन्म लेते हैं। दोनों ही स्थितियों में मनुष्य को दंड का भागी बनना पड़ता है। इनसे बचने का एक ही उपाय है कि मनुष्य स्थितियों के हाथ की कठपुतली न बनकर उन्हें स्वयं को सिद्ध करने का ईश्वर प्रदत्त अवसर समझे। विपरीत परिस्थितियों में वह ईश्वर के न्याय पर भरोसा रखे। जो कुछ उसके साथ घटित हो रहा है उसके रहस्य को वह नहीं जान सकता। यह ईश्वर का नियोजन है। हो सकता है कि उसके किन्हीं पूर्व जन्म अथवा इस जन्म के पापों का फल मिल रहा हो। यह भी संभव है कि उसे सत्य के मार्ग पर लाने की प्रताड़ना और चेतावनी हो। ईश्वर यदि किसी को सफलता प्रदान कर रहा है तो यह उसके पुण्य कर्मों का पुरस्कार हो सकता है। इससे यदि अहंकार, लोभ, वासनाएं पैदा होने लगें तो पुरस्कार का प्रयोजन लुप्त हो जाता है। मनुष्य को जो मिल रहा है, वह आगे बांटने के लिए होता है। प्रकृति में सर्वत्र यही हो रहा है। नदियों ने अपने जल पर, सूर्य, चंद्रमा ने अपने प्रकाश पर, वायु ने अपने प्रवाह पर कोई रोक नहीं लगाई। कदाचित इसीलिए सृष्टि के आदिकाल से ऐसा ही होता चला आ रहा है और बांटने वालों के भंडार कभी खाली नहीं हुए। जब मन विकारों से ऊपर उठ जाए और परमात्मा की सत्ता में रहना सीख ले तभी सहनशीलता का गुण विकसित होता है। सहनशीलता कायरता नहीं है। विकारों को जीत लेना अतुल शौर्य पराक्रम है। संसार में मनुष्य अपनी सत्ता स्थापित करने नहीं आया है। उसके जन्म का उद्देश्य परमात्मा के संरक्षण में अपने सारे पापों को धोकर आत्मा को पावन बनाना है। इसी में वास्तविक आनंद निहित है।

संपादकीय

राजनीति की दुनिया और आपराधिक पृष्ठभूमि के लोग!

राजनीति में आपराधिक पृष्ठभूमि के लोगों का प्रवेश रोकने के लिए लंबे समय से बहसें चलती रही हैं। अमूमन सभी दल और उनके नेता इसे लेकर चिंता जताते हैं, मगर विडंबना यह है कि अब तक कोई ऐसी व्यवस्था नहीं बन सकी है, जिसमें किसी अपराध में लिप्त रहे व्यक्ति को संसद या विधानसभा में पहुंचने से रोका जा सके। मौजूदा कानूनों में जो प्रावधान किए भी गए हैं, वे एक स्तर के बाद इस मामले में कारगर नहीं रह पाते। यह बेवजह नहीं है कि आज भी देश की राजनीति को आपराधिक छवि के लोगों से मुक्त करने का काम अधूरा है। अब इस मामले में सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमित्र ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा है कि अगर कोई व्यक्ति किसी अपराध के लिए एक बार दोषी करार दे दिया जाता है तो उसके चुनाव लड़ने पर आजीवन प्रतिबंध लगा देना चाहिए। इस रपट को

राजनीति में आपराधिक छवि के लोगों के दखल को रोकने की दिशा में एक अहम विचार के रूप में देखा जा रहा है। गौरतलब है कि मौजूदा कानूनी व्यवस्था के तहत अदालत की ओर से किसी अपराध का दोषी घोषित हो जाने और दो साल से ज्यादा की सजा पाने वालों को चुनाव लड़ने पर पाबंदी है, लेकिन यह अवधि छह साल की है। इस अवधि के बाद वही व्यक्ति फिर से संसद या विधानसभा का चुनाव लड़ सकता और जीतने के बाद जनप्रतिनिधि कहला सकता है। अब न्यायमित्र ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि सांसदों को अधिक पवित्र और कानून का पालन करने वाला होना चाहिए। चूंकि सांसद और विधायक लोगों की संप्रभु इच्छा का प्रतिनिधित्व करते हैं, इसलिए एक बार नैतिक अपराध से जुड़ा पाए जाने के बाद उन्हें स्थायी रूप से चुनावी राजनीति के लिए अयोग्य घोषित कर दिया जाना चाहिए। इस संदर्भ में यह पक्ष विचार योग्य हो सकता है कि केंद्र और राज्य सरकार के कर्मचारियों पर लागू सेवा नियमों के अनुसार, नैतिक अधमता से जुड़े किसी भी अपराध के लिए दोषी ठहराए गए व्यक्ति को सेवा से बर्खास्त किया जा सकता है, मगर राजनेताओं को इस मामले में अलग स्तर पर क्यों रखा गया है। हालांकि दिसंबर, 2020 में केंद्र सरकार ने सरकारी कर्मचारियों और राजनेताओं के बीच तुलना को खारिज कर दिया था। सवाल है कि क्या इसे संविधान के अनुच्छेद 14 का उल्लंघन माना जा सकता है? जाहिर है, इस मसले पर अब एक सर्वसम्मत निष्कर्ष पर पहुंचने की जरूरत है, जिसके जरिए राजनीति को अपराधीकरण से पूरी तरह मुक्त किया जा सके। लेकिन आज देश भर में ऐसे अनेक सांसद और विधायक हैं, जिनके खिलाफ लंबित मामलों की संख्या बढ़ी है। हाल ही में आई एडीआर यानी एसोसिएशन आफ डेमोक्रेटिक रिसर्च की एक रिपोर्ट में बताया गया कि करीब चालीस फीसद मौजूदा सांसदों के खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज हैं। इनमें से पच्चीस फीसद मामले गंभीर अपराधों से जुड़े हुए हैं, जिनमें हत्या, हत्या की कोशिश, अपहरण, महिलाओं के विरुद्ध अपराध जैसे मामले शामिल हैं। सवाल है कि देश की संसद तक में इस स्थिति के रहते राजनीति को आपराधिक छवि से मुक्त करने की सदिच्छा का क्या हासिल होगा। **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

जन्म प्रमाणपत्र

नागरिकों की पहचान का प्रामाणिक दस्तावेज किसे माना जाए, यह लंबे समय से विचार का विषय रहा है। इसी क्रम में अलग-अलग दस्तावेजों को वैधानिक मान्यता दी गई। मगर उसमें उलझन फिर भी यह बनी रही कि अपनी पहचान साबित करने के लिए लोगों को एक साथ कई दस्तावेज प्रस्तुत करने पड़ते थे। ऐसे में तय हुआ कि क्यों न कोई ऐसा दस्तावेज लागू किया जाए, जो अंतिम रूप से व्यक्ति की पहचान प्रमाणित करता हो। इसी सोच के साथ आधार पहचानपत्र शुरू किया गया, मगर वह विवादों में घिर गया और उसे व्यक्ति के पहचान का प्रमाणपत्र नहीं माना जा सका। अब सरकार ने जन्म और मृत्यु पंजीकरण (संशोधन) अधिनियम के जरिए जन्म प्रमाणपत्र को एकल दस्तावेज के रूप में मान्यता प्रदान कर दी है। इस तरह लोग विभिन्न आवेदनों के साथ अलग-अलग दस्तावेज लगाने के बजाय केवल जन्म प्रमाणपत्र नत्थी कर सकेंगे। निश्चित रूप से यह बड़ी राहत की बात है। अभी तक बच्चों का दाखिला कराने, विवाह पंजीकरण, मोटर वाहन चलाने के लिए लाइसेंस लेने, पासपोर्ट आदि बनवाने के लिए अलग-अलग दस्तावेज लगाने पड़ते थे। मसलन, जन्मतिथि प्रमाणित करने के लिए अलग दस्तावेज, घर का पता प्रमाणित करने के लिए अलग दस्तावेज लगाना पड़ता था। इन सबके साथ आधार पहचानपत्र भी नत्थी करना जरूरी था। नया नियम अगले महीने से लागू होगा। हालांकि पहले भी जन्म प्रमाणपत्र को प्रमुख दस्तावेज माना जाता था, क्योंकि इसमें व्यक्ति की पहचान से जुड़ी सभी बुनियादी जानकारियां उपलब्ध होती हैं। उसमें जन्मतिथि, जन्म स्थान और माता-पिता की पहचान दर्ज होती है। मगर उसमें दिक्कत यह आती थी कि ग्रामीण परिवेश में रहने वाले लोगों के पास जन्म प्रमाणपत्र की सुविधा नहीं थी। शहरों में तो नगरपालिकाएं यह प्रमाणपत्र बना देती हैं, मगर गांवों में अब भी जन्म-मृत्यु संबंधी विवरण दर्ज करने के लिए कुटुंब रजिस्टर की व्यवस्था चली आ रही है। वह कितना अद्यतन होता है, दावा नहीं किया जा सकता। अगर किसी व्यक्ति को जन्म प्रमाणपत्र की जरूरत होती है, तो ग्राम प्रधान या सरपंच एक कागज पर लिख कर दे देता है। इस तरह गावों में बहुत सारे लोग कुटुंब रजिस्टर में अपने बच्चों के पैदा होने की जानकारी दर्ज कराने की जरूरत ही नहीं समझते। फिर जिन लोगों के नाम उसमें दर्ज होते भी हैं, वे जन्म प्रमाणपत्र को जरूरी दस्तावेज के रूप में संभाल कर नहीं रखते। हालांकि अब डिजिटल रूप में भी जन्म प्रमाणपत्र उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जा रही है, मगर गांवों में चली आ रही व्यवस्था कितनी बदल पाएगी, कहना मुश्किल है। जन्म प्रमाणपत्र को एकल प्रमाणपत्र की मान्यता मिलने से निश्चित रूप से बहुत सारे लोगों के लिए सुविधा हो जाएगी। मगर आधार पहचानपत्र को जिस तरह हर योजना और हर पंजीकरण में अनिवार्य कर दिया गया है और उससे लोगों के व्यक्तिगत विवरणों के चोरी हो जाने का खतरा बताया जाता रहता है, उससे मुक्ति मिलना संभव नहीं लगता। नागरिकता प्रमाणपत्र एक ऐसे दस्तावेज के रूप में होना चाहिए, जो हर नागरिक को सहज सुलभ हो और जिसकी वजह से उसकी व्यक्तिगत गोपनीयता में सेंध लगने का खतरा न हो।

संतशिरोमणी आचार्य श्री 108
विद्यासागर जी महाराज
मुनिपुंगव श्री 108
सुधासागर जी महाराज ससंघ
श्रावक संस्कार शिविरों के जनक परम पूज्य तीर्थचक्रवर्ती जगतपूज्य
निर्यापक श्रमण मुनिपुंगवश्री 108 सुधासागर जी महाराज
क्षुल्लक गौरव श्री 105 गंभीर सागर जी महाराज
के मंगल सानिध्य में आगरा की पुण्य धरा पर
30 वां
श्रावक
शिविर संस्कार
आगरा-दिनांक 19 से 29 सितम्बर 2023 तक
- शिविर आयोजक स्थल-
श्री महावीर दिगम्बर जैन इण्टर कॉलेज परिसर, हरीपर्वत, आगरा (उ.प्र.)
शिविर पुण्यार्जक
श्रावक श्रेष्ठी श्री निर्मल-उर्मिला, वीरेंद्र-उषा रेखा
रजत-आयुषी, रौनक-अदिति,
विभोर विप्री हर्षिल द्रव्या जियांशी मोठ्या परिवार
श्रावक श्रेष्ठी श्री हीरालाल-वीना,
दिवाय-कोमल, उत्कर्ष दिविषा काव्या
अर्हम बैनाडा परिवार
श्रावक श्रेष्ठी श्री राजेश-रजनी,
निखिल-पूजा, शोभित-आरती,
कनिष्का हनीशा, आध्या सेठी परिवार
श्रावक संस्कार शिविर
निर्देशक
हुकम जैन 'काका'
94141-84618
निर्देशक
दिनेश गंगवाल
93145-07802
सुधा अमृत वर्षायोग-2023, आगरा
जगत पूज्य निर्यापक श्रमण मुनिपुंगवश्री 108 सुधासागर जी महाराज का
41वां मुनि दीक्षा दिवस समारोह अश्विन वदी तृतीया
दिनांक 01 अक्टूबर 2023 को दोपहर 12:15 से मनाया जायेगा।
शिविर आयोजक:- श्री दिगम्बर जैन धर्म प्रभावना समिति, आगरा (उ.प्र.)

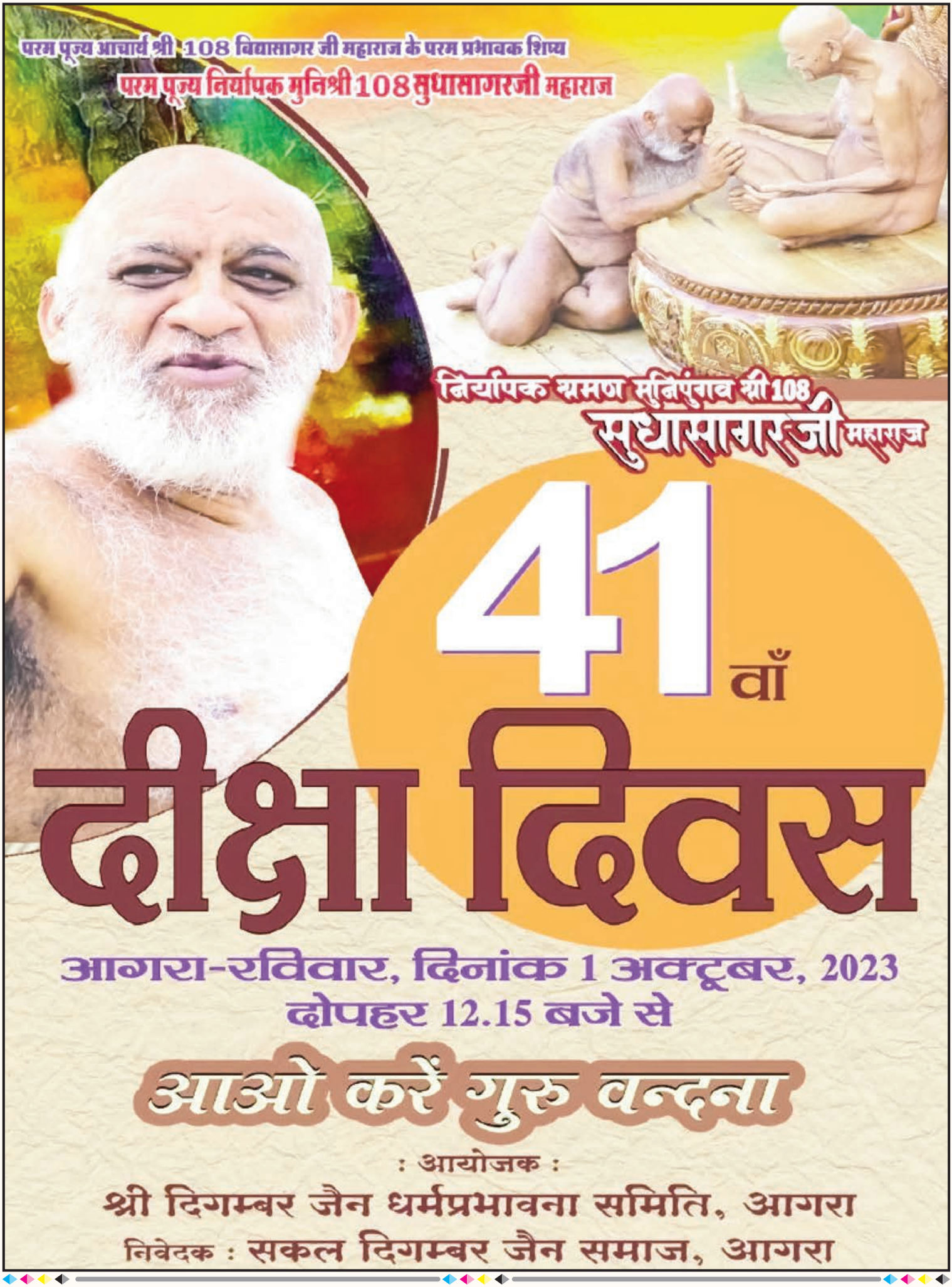
परम पूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य
परम पूज्य निर्यापक मुनिश्री 108 सुधासागरजी महाराज
निर्यापक श्रमण मुनिपुंगव श्री 108
सुधासागरजी महाराज
41 वाँ
दीक्षा दिवस
आगरा-रविवार, दिनांक 1 अक्टूबर, 2023
दोपहर 12.15 बजे से
आओ करें गुरु वन्दना
: आयोजक :
श्री दिगम्बर जैन धर्मप्रभावना समिति, आगरा
निवेदक : सकल दिगम्बर जैन समाज, आगरा

भगवान चंद्रप्रभु का महामस्तकाभिषेक व वृहद शांति धारा की

राजेश अरिहंत. शाबाश इंडिया

टोंक। श्री चंद्रप्रभु दिगंबर जैन मंदिर तेरापंथियान पुरानी टोंक में रविवार को भाद्रपद शुक्ल दोज के पावन अवसर पर भगवान चंद्रप्रभु, महावीर स्वामी एवं पार्श्वनाथ भगवान का महामस्तकाभिषेक किया गया। मंदिर समिति के अध्यक्ष देवराज काला मंत्री चेतन बिलासपुरिया ने बताया कि पंडित दीपक शास्त्री के निर्देशन में चेतन, शिखर,कमल, पारस, अशोक, योगेंद्र, चंद्रशेखर आदि ने सामूहिक रूप से भगवान चंद्रप्रभु की वृहद शांतिधारा की ।श्रद्धालुओं ने भगवान चंद्रप्रभु, महावीर स्वामी,24 तीर्थंकर एवं नित्य नियम की पूजा कर श्री जी को अष्ट द्रव्य एवं श्रीफल समर्पित किये इस अवसर पर चमेली,मधु, सुमन, प्रेमलता, स्नेहलता, आकांक्षा, रतन देवी आदि मौजूद थी। राजेश अरिहंत ने बताया कि मंदिर में दसलक्षण महापर्व 19 सितंबर से 28 सितंबर मनाया जायेगा। दस दिनों तक रोजाना प्रातः श्री जी का अभिषेक- शांतिधारा एवं पूजन होगा ।प्रातः दस बजे तत्वार्थ सूत्र का वाचन, विस्तृत वर्णन एवं तत्वार्थ सूत्र के ज्ञान पर चर्चा होगी। सांयकाल भक्तामर का पाठ एवं विद्वान पंडित दीपक शास्त्री टीकमगढ़ मध्य प्रदेश के पावन सानिध्य में स्वाध्याय होगा जिसके अंतर्गत दस धर्म उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, सोच, संयम, तप, त्याग,अकिंचन, ब्रह्मचर्य पर विस्तृत व्याख्यान दिए जाएंगे। नवीन जैन ने बताया कि मंदिर में

सांयकाल प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का आयोजन होगा जिसमें विजेताओं को श्रावक श्रेष्ठी की ओर से पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे दसलक्षण पर्व के तहत मंदिर में विराजमान समस्त मूर्तियों का विशेष मार्जिन किया गया संपूर्ण मंदिर की परिसर की विशेष साफ सफाई की गई मंदिर को रंग बिरंगी रोशनी के डेकोरेशन से सजाया गया।

जैन धर्म के प्रथम दिगम्बर आचार्य युग प्रवर्तक शांतिसागर महामुनिराज का समाधि दिवस मनाया

ऐसी भावना भावे की हमारी भी उत्कृष्ट समाधि होवे:आर्यिका विशेष मति

जयपुर. शाबाश इंडिया। जनकपुरी - ज्योति नगर जैन मन्दिर में रविवार को दिगंबर जैन धर्म के 20वीं सदी में पहले 1872 में दक्षिण भारत में जन्मे चारित्र चक्रवृत्ति आचार्य श्री 108 शान्ति सागर जी महाराज का समाधि दिवस बाल योगिनी आर्यिका श्री 105 विशेष मति माताजी के सानिध्य में मनाया गया । प्रबंध समिति अध्यक्ष पदम जैन बिलाला ने बताया की प्रातः अभिषेक शान्तिधारा के बाद आचार्य श्री के वृहत चित्र के समक्ष शान्तिधारा कर्ता राकेश जैन आकाशवाणी ,ताराचन्द साखूनिया सहित भक्त जनों द्वारा दीप ज्योति प्रज्वलित की गई तथा उसके बाद पूजा के अर्घ्य श्रीफल तथा अष्ट द्रव्य सहित समर्पित किए गए ।इसी समय विद्वान शिखर चंद जैन ने आचार्य श्री के बारे में बताया की आचार्य शान्तिसागरजी महाराज एक ऐसे प्रमुख साधु श्रेष्ठ तपस्वी रत्न हुए हैं, जिनकी अगाध विद्वता, कठोर तपश्चर्या, प्रगाढ़ धर्म श्रद्धा, आदर्श चरित्र और अनुपम त्याग ने धर्म की यथार्थ ज्योति प्रज्वलित की । आपके इन सब गुणों ने ही आपको चारित्र चक्रवर्ती का सम्मान दिया । आर्यिका विशेष मति माताजी ने अपने प्रवचन में कहा की यह निग्रन्थ श्रमण परम्परा आपकी ही कृपा से अनवरत रूप से आज तक प्रवाहमान है ।आचार्य श्री ने कुन्थलगिरी में 36 दिन की सल्लेखना में केवल 12 दिन जल ग्रहण किया तथा भाद्र शुक्ला दोज रविवार 1955 को ॐ सिद्धोऽहं का ध्यान करते हुए युगप्रवर्तक आचार्य श्री ने नश्वर देह का त्याग कर दिया। हमें भी संयम-पथ पर कदम रखते हुए उत्कृष्ट समाधि की भावना भानी चाहिए । कार्यक्रम में प्रबंध समिति महिला मण्डल युवा मंच सहित समाज के प्रबुद्ध सदस्यों की उपस्थिति रही ।

जे एस जी अनंता द्वारा एक शाम प्रभु महावीर के नाम भक्ति संध्या का आयोजन

उदयपुर. शाबाश इंडिया। जैन सोश्यल ग्रुप अनंता,उदयपुर द्वारा एक भव्य भक्ति संध्या का आयोजन मोती मगरी जैन मंदिर में शनिवार साय को अयोजित किया गया। इस भव्य कार्यक्रम को एस आर जे टीम ने सम्पादित किया । कार्यक्रम में सुर सरताज राकेश चपलोत ने अपने गीतों से भक्तिमय वातावरण उत्पन्न किया वहीं भक्ति गायक सुनील मेहता , हेमंत ने सुरों का ऐसा जबरदस्त समा बांधा की सभी सदस्य झूमने पर मजबूर हो गए। इस अवसर पर मेवाड़ रीजन के चेयरमैन अनिल नाहर , अरुण मांडोत , महेश पोरवाल, गजेंद्र जोधावत, रोशनलाल जोधावत, प्रीतेश जैन,विनोद पगारिया, राजकुमार बाबेल आदि उपस्थित थे। संस्थापक अध्यक्ष एवम् जेएसजीआईएफ के संयुक्त सचिव मोहन बोहरा ने सभी तपस्वियों की अनुमोदना की। अध्यक्ष डा शिल्पा नाहर ने सभी का स्वागत अभिनंदन किया। सचिव राजेश सिसोदिया ने धन्यवाद दिया । इस अवसर पर वशितप आराधना कर रही श्रीमती चन्द्रप्रभा मोदी तथा मासखमण कर रहे आनंद चिराड़िया का अभिनंदन किया गया।

अलख जगाओ मिलकर सारे, हमको देश जगाना हैं...

बेटा पढ़ाओ-संस्कार सिखाओ अभियान पर आधारित हिंदी गीत हुआ रिलीज

सीकर. कासं। बेटा पढ़ाओ - संस्कार सिखाओ अभियान पर आधारित गीत (अलख जगाओ मिलकर सारे... हमको देश जगाना है) का आगाज लोहार्गल तीर्थ धाम में लोहार्गल सूर्य मंदिर पीठाधीश्वर महंत श्री स्वामी अवधेशाचार्य महाराज के कर कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर महंत अवधेशाचार्य महाराज ने अभियान द्वारा किए जा रहे कार्यों की भूरी-भूरी प्रशंसा की एवं इस अभियान को आज के समय की परम आवश्यकता बताया साथ ही गीत की लेखिका डॉ.निरुपमा उपाध्याय, गायक हेमंत शर्मा मुंबई एवं मुंबई के संगीतकार कमल राणा की भी प्रसंशा की। महंत अवधेशाचार्य महाराज ने सभी सनातनियों को एक होकर इस अभियान से जुड़कर कार्य करने का आह्वान किया एवं उन्होंने अभियान के सफलता पूर्वक 5 वर्ष पूर्ण होने पर सभी टीम सदस्यों को शुभकामनाएं प्रेषित कर उज्जवल भविष्य की भी कामना की। इस अवसर पर अभियान संस्थापक एवं अध्यक्ष हरिश शर्मा, सह-संस्थापक आकाश झुरिया, उपाध्यक्ष महावीर नायक बगड़ी, बाबूलाल बगड़ी, कमलेश नायक बगड़ी सहित अभियान के सदस्य का उपस्थित रहे।

नवोदित साहित्यकार डॉ सत्यवान सौरभ को पंडित प्रताप नारायण मिश्र स्मृति राष्ट्रीय युवा साहित्य सम्मान

भीवानी. शाबाश इंडिया। डॉ सत्यवान सौरभ को भाऊराव देवरस सेवा न्यास लखनऊ द्वारा पंडित प्रताप नारायण मिश्र स्मृति युवा साहित्य सम्मान- 2023 का साहित्य पुरस्कार दिया जाएगा। हरियाणा के युवा साहित्यकार डॉ सत्यवान सौरभ को यह पुरस्कार उनके दोहा संग्रह ''तितली है खामोश'' पर दिया गया है।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास पिछले 29 वर्षों से पं. प्रताप नारायण मिश्र युवा साहित्यकार सम्मान से छह साहित्यकारों को सम्मानित करता आया है। न्यास 40 वर्ष तक की आयु वाले साहित्यकारों को उनकी मौलिक रचनाधर्मिता के लिए सम्मानित और पुरस्कृत करता है। न्यास के संयोजक डॉ.विजय कुमार करण एवम संयुक्त सचिव ने बताया कि प्रतिवर्ष दिए जाने वाले इस पुरस्कार को इस वर्ष देश के युवा साहित्यकारों को दिया जाएगा। डॉ सत्यवान सौरभ वर्तमान में हरियाणा के उभरते साहित्यकारों में से एक है। दैनिक संपादकीय लेखन में ये देश भर में प्रसिद्ध है और आए रोज इनके लेख देश- विदेश के हजारों अखबारों में विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित होते हैं। इनकी अब तक 4 पुस्तकें यादें, कुदरत की पीर, परियों से संवाद, तितली है खामोश सभी हिंदी भाषा में और एक अंग्रेजी भाषा में 'इश्यूज एंड पैन' प्रकाशित हो चुकी हैं।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

श्री दिगंबर जैन मंदिर 24 महाराज में हुई एक साथ 11 शांति धारा

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री दिगंबर जैन मंदिर 24 महाराज में रविवार को एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें एक समय में 11 वेदियाँ एवं मूलनायक वेदी में अलग अलग परिवारों द्वारा एक साथ शांतिधारा की गई। तत्पश्चात सामूहिक शांति विधान का आयोजन किया गया एवं अरुणा छाबड़ा द्वारा लब्धि विधान तेला किया गया। इस समय कई व्यक्ति उपस्थित थे जिसमें विकास, दीपक, पीयूष, विजय, विमला, संतोष देवी उपस्थित रहे। पूजा कासलीवाल ने बताया कि मूलनायक वेदी की शांति धारा महावीर, मनीष कासलीवाल द्वारा की गई।

शांतिवीर नगर श्रीमहावीरजी में प्रथमाचार्य श्री 108 शांतिसागर जी महाराज के 68वें समाधि दिवस पर प्रात: पंचामृताभिषेक हुए

चंद्रेश कुमार जैन. शाबाश इंडिया

श्री महावीर जी। श्री 1008 शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर मे प्रथमाचार्य श्री 108 शांतिसागर जी महाराज के 68वें समाधि दिवस पर प्रातः पंचामृताभिषेक शांतिधारा तत्पश्चात आचार्य श्री शांतिसागर पूजन विधान किया गया तत्पश्चात विनयांजलि सभा जिस मे ट्रस्ट मंत्री राजकुमार कोठ्यारी ताराचंद जी भौसा, संस्थान प्रबंधक संजय जैन, अरविंद जैन, सुरेन्द्र जैन, प्रेमचंद, संगीता जैन, अंकित- नेहाजैन, शांतिवीर गुरुकुल छात्र एंव दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप श्रीमहावीरजी के अध्यक्ष चन्द्रेश जैन एंव बाहर से पधारे सभी धर्मावलंबियों सहित सभी ने अपनी अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित कर श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

राधा निकुंज दिगम्बर जैन मंदिर में लगेगी सुगंध दशमी पर भव्य झांकी

जयपुर. शाबाश इंडिया। राधा निकुंज दिगम्बर जैन मंदिर नवयुवक मंडल ने आज जनसेवक सांगानेर पुष्पेंद्र भारद्वाज एवं सुनील सिंघानिया से सुगंध दशमी के पावन पर्व 24 सितंबर 2023 को लगने वाली द्रोणागिरी सिद्ध क्षेत्र झांकी के पोस्टर विमोचन कराया गया। इस मौके पर नवयुवक मंडल अध्यक्ष अभिषेक शाह, रवि रावंका जी, पीयूष जैन जी, अंकित श्रीमाल जी और मानव जैन जी मौजूद रहे।

महामूषक ध्वज अर्पण के साथ बंगाली बाबा गणेश मंदिर में श्री महागणपति महोत्सव शुरू

जयपुर. शाबाश इंडिया। दिल्ली रोड स्थित बंगाली बाबा गणेश मंदिर में श्रीमहागणपति महोत्सव रविवार से महामूषक ध्वज अर्पण के साथ हुआ। इस मौके पर आसपास का क्षेत्र प्रथम पूज्य के जयकारों से गुंजायमान हो उठा। महोत्सव 19 सितम्बर तक चलेगा। सोमवार को विभिन्न धार्मिक आयोजन के साथ सिंजारा पर्व मनाया जाएगा। बंगाली बाबा मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष नारायण लाल अग्रवाल व उपाध्यक्ष व कार्यक्रम संयोजक संजय पतंगवाला ने बताया कि महोत्सव का शुभारंभ रविवार को सबह 10 बजे महामूषक ध्वज अर्पण के साथ हुआ। इस मौके पर मंदिर की परिक्रमा लगाकर मंत्रोच्चारण के बीच महामूषक ध्वज अर्पण किया गया और शिखर पर ध्वजा फहराई गई। उन्होंने बताया कि महोत्सव के दूसरे दिन सोमवार को सुबह 9 बजे सिद्धपीठ धाम मुहाना के कमलेश जी महाराज प्रथम पूज्य का जयकारों के बीच पंचामृत अभिषेक करेंगे। इसी दिन सुबह 10 बजे सिंदूर अर्पण व सुबह 11 बजे सिंजारा पर्व मनाया जाएगा। इस मौके पर सौभाग्य देवी पूजन, चन्द्रार्चन, मेहंदी व सौभाग्य देवी अर्पण के कार्यक्रम होंगे।

विराट वैश्य महापंचायत

एकजूट हुआ सकल वैश्य समाज व्यापारी कल्याण आयोग गठित करने की आवाज उठा राजनीति में मांगा उचित प्रतिनिधित्व

जयपुर. शाबाश इंडिया। राजधानी जयपुर में विराट वैश्य महापंचायत समिति के बैनर तले मानसरोवर में हुई विराट वैश्य महापंचायत में सकल वैश्य समाज ने भारी संख्या में भाग लिया। इस आयोजन में राज्य मंत्री, विधायकों, पूर्व विधायकों के साथ ही अग्रवाल, माहेश्वरी, जैन, खंडेलवाल समाज के अध्यक्षों समेत कई जनप्रतिनिधि शामिल हुए। समारोह अध्यक्ष प्रदीप मित्तल के नेतृत्व में हुई इस विराट महापंचायत में खास बात यह रही की वक्ताओं ने राजनीतिक मंशा से अधिक समाज की मांगों पर जोर दिया। मित्तल ने मंच से जो महापंचायत की प्रमुख मांगें रखी वे इस प्रकार रहीं : आबादी के अनुपात में राजनीति के क्षेत्र में भागीदारी नाम मात्र की है इसीलिए आगामी चुनावों मे 40 सीटें देने की मांग। वैश्य समाज की एक जुटता के लिए उपजातियों के दरम्यान बेटी और रोटी के संबंध हो। संवैधानिक अधिकारों वाले व्यापारी कल्याण आयोग के गठन की मांग। ई.डबल्यू.एस में आरक्षण को बढ़ाकर 15% किया जाए तथा महंगाई के मद्देनजर इसकी लिमिट को बढ़ाकर 12 लाख किया जाए। व्यापारियों के लिए पेंशन व्यवस्था लागू की जाए।

दिगंबर जैन मन्दिर महावीर नगर का 39वां स्थापना दिवस आज

जयपुर. शाबाश इंडिया

टोंक रोड स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर महावीर नगर का 39वा स्थापना दिवस रोट तीज 18 सितंबर को धूम धाम से मनाया जायेगा। मंदिर कमेटी के अध्यक्ष अनिल जैन एवं मंत्री सुनील बज ने बताया कि प्रातः अभिषेक शांतिधारा के बाद जैन भवन में सामूहिक पूजन किया जाएगा । कार्यक्रम सयोजक ओर मंदिर जी के सयुक्त मंत्री पवन तिजारावालो ने बताया की शाम को 108 दीपकों से श्रीजी की महा आरती होगी कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रवीण चंद जैन(पूर्व आई ए एस) एवं अनन्त शोभा कासलीवाल होगे। दीप प्रज्ज्वलन किशन कुमार मंजू जैन द्वारा किया जायेगा। सामूहिकआरती के बाद प्रसिद्ध गायक नरेंद्र जैन एंड पार्टी द्वारा भजनों की प्रस्तुति होगी। श्रीफल का वितरण श्री के.के.अग्रवाल (डोईटी वाले) परिवार द्वारा किया जायेगा । पुरस्कार वितरण पदमचंद नीरज गंगवाल की ओर से किया जायेगा कार्यक्रम सयोजक प्रवीण जैन(एडवोकेट) ओर चक्रेश जैन है। मंदिर जी की पूरी कार्यकारणी ने समाज के सभी लोगो से कार्यक्रम में भाग लेने की अपील की हैं।

धर्म एवं संस्कृति की परंपरा को अक्षुण्ण बनाने के लिए पर्वों का महत्वपूर्ण स्थान : गुरु माँ विज्ञाश्री माताजी

गुंसी. शाबाश इंडिया। भारत गौरव गणिनी आर्यिका 105 विज्ञाश्री माताजी ने प्रवचन सभा में भक्तों को संबोधन देते हुए कहा कि -भारत देश विविध धर्मों एवं संस्कृतियों का संगम है और जहां संगम है वह पवित्र स्थान कहा जाता है। भारतीय धर्म एवं संस्कृति परंपरा को अक्षुण्ण बनाने के लिए पर्वों का महत्वपूर्ण स्थान है। यदि पर्वों का अस्तित्व नहीं होता तो लोक में धर्म एवं संस्कृति के बिना मानव जीवन संस्कार विहीन लुप्त हो जाता है । जैन दर्शन में पर्व धर्म भावना को वृद्धिंगत करने का अद्वितीय काम करते हैं। श्री दिगम्बर जैन सहस्त्रकूट

विज्ञातीर्थ , गुन्सी के तत्वावधान में हनुमान सहाय शिवाड़ वाले निवाई वालों ने श्री 1008 शांतिनाथ महामण्डल विधान रचाया । मंडल पर 120 अर्घ्य चढ़ाकर भक्तिभावों के साथ मंगल आरती उतारी। आगामी 19 सितम्बर से चल रहे पर्वराज पर्युषण महापर्व पर श्री दशलक्षण महामण्डल विधान का आयोजन होगा । जबलपुर से कक्काजी ने गुरु माँ का वात्सल्य पूर्ण आशीष प्राप्त किया । आज की शान्तिधारा करने का सौभाग्य सुनील जैन चित्रकूट कॉलोनी जयपुर वालों ने प्राप्त किया ।

मुरलीपुरा जैन मंदिर में चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित

जयपुर. शाबाश इंडिया। रविवार 17 सितंबर को भारतीय जैन मिलन, राजस्थान जैन आर्गेनाइजेशन, श्री भारतवर्षीय दि. जैन युवा महासभा एवं श्री महावीर दि. जैन मंदिर सेवा समिति मुरलीपुरा के संयुक्त तत्वावधान में मुरलीपुरा जैन मंदिर में 8 वर्ष से लेकर ऊपर सभी आयु वर्ग हेतु चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। मंदिर समिति के महामंत्री नीरज जैन ने बताया कि प्रतियोगिता में बच्चों से लेकर बड़ी महिलाओं ने भी उत्साह के साथ भाग लिया। सभी प्रतिभागियों को ड्राइंग हेतु छः विषयों में एक विषय चुनकर ड्राइंग बनाने हेतु कहा गया। सभी ने संबंधित विषय लेकर अपनी कल्पना के रंग उसमे भरें। इस अवसर पर कार्यक्रम संयोजिका टीना अमित जैन, निकिता शुभम अजमेरा एवं धर्मचंद जैन, सुभाष जैन, अमित जैन, रिंकू जैन की विशेष उपस्तिथि रही।

आदिनाथ जैन मंदिर विवेक विहार में दशलक्षण पर्व कार्यक्रम पोस्टर का विमोचन हुआ

जयपुर. शाबाश इंडिया। दिनांक 19 सितंबर से 28 सितंबर तक होने वाले 10 दिवसीय दश लक्षण महापर्व की तैयारी के अंतर्गत आज आदिनाथ जैन मंदिर विवेक विहार में दशलक्षण पर्व कार्यक्रम के पोस्टर का विमोचन किया गया। विवेक विहार दिगंबर जैन समाज के सहसचिव नरेश जैन मेड़ता ने ने बताया कि शनिवार के दिन मंदिर जी मे दश लक्षण पर्व के कार्यक्रम को लेकर चर्चा की गई । दशलक्षण पर्व संयोजक दीपक सेठी के निर्देशन में अध्यक्ष अनिल जैन आईआरएस एवं कार्यकारिणी के सदस्य एवं समाज के वरिष्ठ पुरुष और महिलाओं द्वारा मंदिर परिसर मे पोस्टर का विमोचन किया गया। इस अवसर पर संयोजक दीपक सेठी ने 10 दिवसीय दश लक्षण पर्व में होने वाले कार्यक्रम की जानकारी दी ।